उर्वशी तंत्र

जिसके द्वारा अद्वितीय सुन्दरी अप्सरा को जीवन भर के लिए प्रेमिका बनाई जा सकती है।

विश्वामित्र एक अद्वितीय महर्षि, क्रांतिकारी और मन्त्र सृष्टा थे, ब्रह्मा के विरोध करने पर विश्वामित्र ने चुनौती दे दी कि मैं सर्वथा नवीन सृष्टि रचकर बता दूंगा और उन्होंने नवीन पृथ्वी, पशु-पक्षी, वनस्पति, की रचना प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी, यह देखकर ब्रह्मा घबराये और उन्होंने विश्वामित्र से क्षमा याचना की।

इसी ऋषि ने एक अद्वितीय ग्रन्थ की रचना की, जिसे 'उर्वशी-तंत्र' कहा जाता है, जिससे उर्वशी को प्रत्यक्ष किया जा सकता है, और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

यह तन्त्र सर्वथा गोपनीय रहा है, कई वर्षों से इस तन्त्र की चारों तरफ खोज थी, परन्तु प्रतिलिपि प्राप्त ही नहीं हुई पहली बार पत्रिका पाठकों को प्रामाणिक उर्वशी तन्त्र का सांगोपांग विवरण वर्णन……..

संसार की तीन अद्वितीय सुन्दरियां मानी गई है, जिनके नाम उर्वशी, रम्भा, और मेनका है, इनमें भी उर्वशी का नाम सर्वोपरि है, और ये सुन्दर स्त्रियां देवताओं के राजा इन्द्र की सभा में अद्वितीय नृत्य और सूर्य के समान सौन्दर्य से सबको अभिभूत किये रहती है।

उर्वशी के बारे में ग्रन्थों में कहा गया है, कि वह चिरयौवना है, हजारों वर्ष बीतने पर भी यह १८ वर्ष की उम्र की युवती के समान अल्हड़ मदमस्त और यौवन रस से परिपूर्ण रहती है, सारा शरीर एक अद्वितीय सुन्दरता से परिपूर्ण रहता है, जिसको देखकर व्यक्ति तो क्या, देवता भी ठगे से रह जाते है, विश्वामित्र संहिता के अनुसार गोरा अण्डाकार चेहरा, लम्बे और एड़ियों को छूते हुए घने श्यामल केश, जैसे कोई बादलों की घटा उमड़ आई हो, गोरा रंग ऐसा, कि जैसे स्वच्छ दूध में केसर मिला दी हो, बड़ी-बड़ी खंजन पक्षी की तरह आंखें

जो हर क्षण गहन जिज्ञासा लिए हुए इधर-उधर देखती हो, छोटी चिबुक, सुन्दर और गुलाबी होंठ, आकर्षक चेहरा और अद्वितीय आभा से युक्त शरीर....सब मिला-कर एक ऐसा सौन्दर्य जो उंगली लगने पर मैला हो जाय ऐसी ही सौन्दर्य की सम्राज्ञी उर्वशी संसार की अद्वितीय सौन्दर्य सम्राज्ञी है जो अपने यौवन सौन्दर्य के माध्यम से पूरे संसार को मोहित किये हुए है।

विश्वामित्र ने जब यह सुना कि उर्वशी इन्द्र के दर-बार की उज्ज्वल सौन्दर्यमयी नृत्यांगना है, जिसके नृत्य से मनुष्य तो क्या बहता हुआ पानी भी ठिठक कर रुक जाता है, तो उन्होंने आज्ञा दी कि उर्वशी मेरे आश्रम में भी नृत्य करे।

विश्वामित्र ने अपना सन्देश इन्द्र तक पहुँचा दिया और इन्द्र ने हाथों हाथ मना कहलवा दिया कि यह किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं है।

विश्वामित्र तो हठी योगी रहे हैं, उन्होंने मन्त्र बल से उर्वशी को अपने आश्रम में बुलाया और कहा-तुम्हें ठीक वैसा ही नृत्य मेरे शिष्यों के सामने इस आश्रम में करना है जैसा इन्द्र की सभा में तुम करती हो।

उर्वशी ने यौवन के नशे में चूर दम्भ से मना कर दिया और इठलाती हुई पुनः इन्द्रलोक चली गई।

विश्वामित्र तिलमिला कर रह गये। उन्होंने उसी क्षण प्रतिज्ञा की कि मैं सर्वथा नये तन्त्र की रचना करूंगा और तन्त्र बल से इसे अपने आश्रम में बुलाऊंगा एक बार नहीं जब भी चाहूं नृत्य करवाऊंगा, और इसी जिद और क्रोध का परिणाम हुआ "उर्वशी तन्त्र"।

किसी भी अप्सरा की साधना चार रूपों में की जा सकती है, मां, बहिन, पत्नी और प्रेमिका के रूप में साधना सम्पन्न करना श्रेष्ठ माना गया है। विश्वामित्र ने प्रेमिका रूप से तन्त्र रचना की, इसी तन्त्र के माध्यम से उर्वशी को अपने आश्रम में आने के लिए बाध्य किया और उसे अद्वितीय नृत्य करना पड़ा, इसके अलावा उर्वशी सिद्ध कर निम्न पदार्थ प्राप्त किये जाते हैं।

१— जब भी चाहे उर्वशी को प्रत्यक्ष बुलावे और उसका नृत्य देखे।

२— उर्वशी का प्रेमिका रूप में उपयोग करे, उसके साथ रमण करे।

३— उर्वशी के माध्यम से मनोरंजन प्राप्त करें।

४— उर्वशी के द्वारा अतुलनीय धन, वैभव प्राप्त करे।

५— उर्वशी के द्वारा चिरयौवन प्राप्त कर जीवन का पूर्ण आनन्द उपभोग करे।

६— उर्वशी सिद्ध कर उन पदार्थों और भोगों को प्राप्त करे जो उसके मन की आकांक्षा होती है।

विश्वामित्र के बाद उनके शिष्य भूरिश्रवा, चिन्मय, देवसुत गन्धर्व, और यहां तक कि देवी विश्वा और रत्नप्रभा ने भी उर्वशी सिद्ध कर जीवन के सम्पूर्ण

उर्वशी साधना

पौर्णमास्यां तथा विभवतः पूजा कृत्वा सम्मुख उर्वशी यन्त्र स्थापयेत् घृत दीपं प्रज्वाल्य सकल रात्रि मंत्र जपेत्। मुक्तक माल्यायुत जपे, दिवसे सप्तमे नुपुर ध्वनि श्रृणुयात् एक विंशति रात्रौ स आगच्छ कुसुमासनं दद्यात्, स्वागत मिति वक्तव्य भो-भो साधक किमाज्ञा पश्यसि,तदा साधकेन वक्तव्य प्रिया भार्या भवति। आलिंगन चुम्बनं च तथा सः कर्तव्यं तुष्ट कामये एवं सिद्धा भवति यमिच्छति कामं स प्रदाति, स रस रसायन सिद्ध द्रव्याणि ददाति यावज्जीवे अर्द्ध रात्र नीयत मां आगच्छति आगतः सा शीघ्रं कामयितव्या, तुष्टा भवति सुवर्ण मुक्तादिनी ददाति कामिक भोजन सुख यौवन ददाति सन्तुष्ट भवति।

—मन्त्र-महार्णव से

भोगों का भोग किया। गोरखनाथ ने भी इस साधना के माध्यम से चिरयौवन प्राप्त किया और गोरखपुर में उन्होंने हजारों शिष्यों के सामने सदेह उर्वशी को बुलाकर अद्वितीय नृत्य सम्पन्न करवाया। इतिहास साक्षी है कि स्वामी शंकराचार्य ने इसी साधना को सम्पन्न कर अपने शिष्य पद्मपाद को अतुलनीय वैभव का स्वामी बना दिया, यही नहीं अपितु मण्डन मिश्र के शास्त्रार्थ के दिनों में शंकराचार्य ने उर्वशी तन्त्र के माध्यम से उसे अपने सामने बुलाकर उससे काम कला की वे बारीकियां समझी जो सन्यासी होने की वजह से उनके लिए असंभव थी, इसी साधना के बल पर आज से सौ साल पहले स्वामी विशुद्धानन्द जी ने बनारस में नवमुण्डी आश्रम में अभिनय नृत्य कराकर अंग्रेजों को आश्चर्यचकित कर दिया था, और उस समय के तत्कालीन कलेक्टर ग्लासिंग ने तो कहा था, कि मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसी सुन्दरी नहीं देखी वह अचानक आई और जो नृत्य उसने किया वह आश्चर्यचकित करने वाला था।

उर्वशी साधना कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है, शास्त्रों के अनुसार भी उर्वशी की साधना पत्नी या प्रेमिका के रूप में ही सम्पन्न करनी चाहिए।

उर्वशी

साधना विधि

यह साधना ४९ दिनों की है, किसी भी पूर्णमासी की रात्रि से यह साधना प्रारम्भ की जाती है, घर के किसी कोने में सफेद आसन बिछाकर उत्तर की तरफ मुंह कर बैठ जाय, सामने घी का अखण्ड दीपक प्रज्वलित

और इन अप्सराओं की साधनाएं भी होती हैं

महामाया अप्सरा, सर्वांग सुलोचना, मातंगेश्वरी, शशीदिव्य अप्सरा, तिलोत्तमा, कांचनमाला कुण्डल धारिणी, रत्नमाला रम्भा, उर्वशी, भूषणा, , किन्नरी, मंजु घोषा, मनोहारी, सुभगा, विशाल नेत्रा सुरति-क्रिया, दिव्यामुखी, विलासिनी, माहेन्द्री, कामिनी, मदना, विचित्रा, शिवार्चना, रंजिनी, वदना, मदनप्रिया, शुभ्रा, कामदा, मधुरानना, भोगदा, प्राणदा, प्रमोदा, मदविह्वला, चन्द्रिका, बहुदा, पद्मा, मेनका, सिद्धा, सुशोभिना, त्रैलोक्य मोहिनी अप्सरा आदि आदि।

करे, और स्वयं पानी में गुलाब का थोड़ा सा इत्र मिलाकर स्नान कर स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाय, और सामने **उर्वशी मन्त्र और चित्र** रखकर मोती की माला से मन्त्र जप करे।

मन्त्र

ॐ श्रीं क्लीं आगच्छागच्छ स्वाहा।

मन्त्र जप समाप्ति के बाद उसी स्थान पर सो जाय।

इन ४६ दिनों में वह न तो किसी से बात करे, और न कमरे से बाहर जाय, केवल शौचादि क्रिया सम्पन्न करने के लिए बाहर जा सकता है, सातवें दिन निश्चय ही घुंघरुओं की मधुर आवाज सुनाई देती है; मगर साधक को चाहिए कि वह अविचलित भाव से मंत्र जप करता रहे इक्कीसवें दिन बिल्कुल ऐसा लगेगा कि जैसे कोई सुन्दरी कमरे में आई और पूरे कमरे में एक अपूर्व सी सुगन्ध फैल जायगी, इसके बाद नित्य ऐसी सुगन्ध और ऐसा आभास होता ही।

३६ वें दिन बिल्कुल ऐसा लगेगा कि जैसे कोई अद्वितीय सुन्दरी आसन के पास आकर बैठी है, मगर साधक अविचलित न हो और मंत्र जप करता रहे, ४७ वें दिन साधक की परीक्षा प्रारम्भ होती है, और वह सशरीर उपस्थित होकर साधक की गोदी में बैठ जाती है, फिर भी साधक को चाहिए कि वह न तो विचलित हो और न कामोत्तेजक हो, ४६ वें दिन वह अपूर्व शृंगार कर साधक से सट कर बैठ जायगी और पूछेगी कि मेरे लिए क्या आज्ञा है, तब साधक कहे कि मेरी पत्नी वन प्रेमिका की तरह प्रसन्न कर, तब वह सिद्ध हो जाती है, और जीवन भर सुख काम, द्रव्य प्रदान करती रहती है।

यह आजमाया हुआ है, और अपने आप में प्रामाणिक सिद्ध प्रयोग है, एक बार सिद्ध करने पर फिर जीवन में बार-बार प्रयोग करने की जरूरत नहीं रहती, इस साधना में तीन बातें आवश्यक है—१-साधनाकाल में वह ४६ दिनों तक किसी से भी कुछ भी न बोले, २-साधना के बाद उर्वशी सिद्ध होने पर परस्त्रीगमन न करे, ३-उर्वशी तन्त्र सिद्ध होने पर उसके साथ रमण करे और कुछ भी चाहे प्राप्त करे, पर द्रव्य का दुरुपयोग न करे।

यह साधना आज भी जीवित है, और वर्तमान में भी कई तांत्रिकों ने इसे सिद्ध कर रखा है, वस्तुतः यह जीवन को एक अद्भुत और पूर्ण सुखोपभोग देने वाली सौन्दर्यमयी साधना है, जिसे सिद्ध करने में शास्त्रीय दृष्टि से भी किसी प्रकार का बन्धन या दोष नहीं है।

★ ★ ★

अप्सरा से क्या-क्या मांगे

१- उसे प्रेमिका या पत्नी रूप में जीवन भर साथ रहने के लिए कहें, २-नित्य रात्रि को या जब भी बुलावे तब आवे, ३-नृत्य गान एवं वार्ताओं से साधक का मनोरंजन करे, ४-कामकला से सुख प्रदान करे, ५-साधक को पूर्ण यौवन प्रदान करे और वह रमण में सिद्ध हो ६-कभी भी रोग या वृद्धता न आवे ७-सुख सौभाग्य प्रदान करे, ८-जब भी जितना भी धन मांगे वह लाकर दे, ९-वस्त्र आभूषण स्वर्ण मुद्रा, प्रदान करे, १०-नित्य अपूर्व सौन्दर्य एवं यौवन से पूर्णता प्रदान करे, ११-मधुर हास्य के साथ आनन्द प्रदान करे, १२-सभी प्रकार की सांसारिक चिन्ताओं को दूर करे।